na język hindi przełożył Mandar Purndare

Usta i oczy

Znam tyle twoich pieszczot! Lecz gdy dzień na zmroczu
Błyśnie gwiazdą, wspominam tę jedną – bez słów,
Co każe ci ustami szukać moich oczu…
Tak mnie zegnasz zazwyczaj, im powrócę znów.

Czemu właśnie w tej chwili, gdy odejść mi pora,
Pieścisz oczy, nim spojrzą w czar lasów i łąk?…
Bywa tak: świt się budzi od strony jeziora,
Nagląc nas do rozplotu snem zagrzanych rąk…

O szyby – jeszcze chłodne – uderza pozłotą
Nagły z nieba na ziemię świateł zlot i spust –
Usta twe – na mych oczach! Co chcesz tą pieszczotą
Powiedzieć? Mów – lecz zmyślnych nie odrywaj ust!

बोलेस्लाव लेश्मयिान
मंदार पुरंदरे

लब और आँखें

तुम्हारा लाड, प्यार, दुलार
तुम्हारा सहलाना,
तुम्हारी हरकतें,
कतिना कुछ है मुझको परचिति
लेकनि जब दनि अँधेरे में बदलकर
तारों से जगमगाने लगता है
तब एक ही हरकत याद आती है मुझे – नःिशब्द
तुम्हारे लबों का मेरी आँखों को खोजना
ऐसा क्या होता है तुम्हें, कि हमेशा इसी तरह अलवदिा लेती हो !!

अब जबकि तुमसे बदिा लेने की घडी आ चुकी है,
तो क्यों इतना प्यार-दुलार दे रही हो
मेरी इन आँखों को...
इन आँखों को जंगलों का, घास के मैदानों का
जादू देखने तो दो !
अभी, तालाब की ओर से पौ फट रही है
हमसे गुज़ारशि कर रही है,
कि गिर्म हथेलयिों के सपने ज़रा देर के लिए उतारकर रखें

खड़िकी के शीशे अभी ठन्डे हैं, उनपर सोना बरस रहा है
तीव्रता से आसमान की ओर से ज़मीं की तरफ़ बहता सुनहला प्रकाश
और तुम्हारे लब – मेरी आँखों पर, टकि हुए !
क्या कहना चाहती हो तुम ? कहो, बस एक शर्त है,
इन मदभरे लबों को यूँही टकि रहने दो!